Dr. Pankaj Kumar Yadav
S.N.S.R.K.S College
L.S.W

बेरोजगारी व्यापार के उतार-चढ़ाव के कारण उत्पन्न होती है जब व्यापार उन्नति (Boom) पर होता है, तब उन लोगों को नियोजन के अवसर मिल जाते हैं, लेकिन मंदी (Depression) के फलस्वरूप समय बड़ी संख्या में लोगों को अपने रोजगार से हाथ धोना पड़ता है और रोजगार के कमी के कारण अन्य लोगों को ~~भी अपने रोजगार~~ ~~से हाथ धोना~~ भी काम नहीं मिल पाता है। पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में व्यापार में इस तरह के उतार-चढ़ाव आते रहते हैं। 1929 की महामंदी (Great Depression) के फलस्वरूप विश्व के कई देशों में बड़ी संख्या में लोग चक्रीय बेरोजगार के शिकार हो गए थे।

## 8. संरचनात्मक बेरोजगारी (Structural Unemployment):-

कभी कभी अर्थव्यवस्था के संरचनात्मक परिवर्तनों के कारण बेरोजगारी उत्पन्न होती है। निर्यात, आयात, उत्पादन, वितरण, विनियम आदि क्षेत्रों में होने वाले परिवर्तनों के कारण भी कई लोग बेरोजगार हो जाते हैं। उदाहरणार्थ, अगर विदेशी बाजार में निर्यात की जाने वाली वस्तुओं की माँग घट जाती है तो उनके उत्पादन में लगे श्रमिकों को बेरोजगार होना पड़ता है।

## 9. शिक्षित बेरोजगारी (Unemployment of the Educated):-

भारत जैसे कई विकासशील देशों में शिक्षा और प्रशिक्षण प्राप्त किये हुए अनेक लोगों को उसकी योग्यता के अनुसार काम नहीं मिल पाता। बिना पढ़ लिखे लोग तो शारीरिक श्रम के जरिए अपने जीवन यापन के लिए कुछ न कुछ अर्जित कर लेते हैं, लेकिन सामान्यतः शिक्षित व्यक्ति शारीरिक काम करना नहीं चाहते। भारत में ~~डिग्री~~ इंजीनियरी, मेडिकल तथा अन्य व्यवसायिक पाठ्यक्रमों में डिग्री या डिप्लोमा तथा उच्च शिक्षा प्राप्त लाखों लोगों की संख्या बेकार बैठे हुए हैं।

## 10. अन्य प्रकार (Other Type):-

बेरोजगारी के लिए कुछ अन्य प्रकार भी हैं- जैसे (i) अस्थाई बेरोजगारी (Temporary Unemployment) (ii) ऐच्छिक बेरोजगारी (Voluntary Unemployment) (iii) खुली बेरोजगारी (Open Unemployment) (iv) ग्रामीण बेरोजगारी (Rural Unemployment) तथा (v) शहरी बेरोजगारी (Urban Unemployment)-

## Unemployment Situation of India (भारत में बेरोजगारी की स्थिति)

भारत के विभिन्न आंकड़े के द्वारा। यह जानकारी मिलती है कि यहाँ बेरोजगारों की संख्या बहुत अधिक है। देश में अभी तक ~~सभी~~ बेरोजगारों के सही आँकड़े को एकत्रित करने की व्यवस्थित पद्धति का अभाव रहा है फिर भी समय

Dr Pankaj Kumar
S.N.S.R.K.S College Saharsa
L.S.W



Unemployment

समय समय पर इस दिशा में प्रयास किया गया है, जिसका ब्योरा नीचे दिया गया है।

देश के पंचवर्षीय योजनाओं बेरोजगारी की मात्रा से सम्बन्ध कुछ में कुछ आँकड़े दिए गए हैं। पहली पंचवर्षीय योजना के अन्त में लगभग 53 लाख लोगों के बेरोजगार होने का अनुमान था। द्वितीय पंचवर्षीय योजना काल श्रमशक्ति में लगभग एक करोड़ अतिरिक्त लोगों को सम्मिलित किए जाने का अनुमान लगाया गया। इन आँकड़ों में ग्रामीण क्षेत्रों में व्यापक अल्परोजगारों को सम्मिलित नहीं किया गया था। इस योजना के अन्त तक लगभग 80 लाख लोगों को ही रोजगार दिलाया गया।

तीसरी पंचवर्षीय योजना के अवधि में 1.7 करोड़ लोगों को श्रमशक्ति में सम्मिलित किया गया, का अनुमान है तथा इसी योजना काल में 2.6 करोड़ लोगों को रोजगार देने की समस्या थी। इस योजना के क्रम में 1.5 करोड़ लोगों को ही रोजगार दिलाया गया। इस तरह इस योजना के अन्त में 1.2 करोड़ लोग बेरोजगार थे।

चौथी पंचवर्षीय योजना में बेरोजगारों की मात्रा या योजना काल में उपलब्ध कराने के अनुमान नहीं दिए गए लेकिन योजना आयोग के द्वारा बेरोजगारों की सही आँकड़े के लिए भगवती (Bhagwati) की अध्यक्षता में एक विशेष समिति की नियुक्ति की। समिति ने श्रमशक्ति तथा स्वरोजगार संबंधि विस्तृत आंकड़े के अभाव में बेरोजगारी की सही आंकड़े के अनुमान लगाने में असमर्थता व्यक्त की। फिर भी समिति ने 1971 में देश 1.9 करोड़ लोग बेरोजगार थे, जिसमें 97 लाख लोग अल्परोजगार (सप्ताह में 14 घंटे से कम काम पानेवाले) भी सम्मिलित थे। इन बेरोजगारों में 1.6 करोड़ लोग ग्रामीण क्षेत्र के थे और 30 लाख लोग शहरी क्षेत्र के थे।

समिति के अनुसार 1966 और 1971 के बीच रोजगार खोजने वाले की संख्या में औसत वार्षिक वृद्धि दर 20.1 प्रतिशत थी लेकिन 1971 और 1972 के बीच यह दर बढ़कर 52.8 हो गई।

पाँचवीं पंचवर्षीय योजना में बेरोजगारी संबंधि आंकड़े का अभाव है। इस योजना में कई बार संशोधन किए गए। छठी योजना में पाँचवीं पंचवर्षीय योजना के दौरान उल्लेख किया गया है।

छठी ~~सातवीं~~ पंचवर्षीय योजना में बेरोजगारी से संबंधित कई तरह के आंकड़े दिए गए। योजना के प्रारंभ में ग्रामीण क्षेत्रों में 1.6 करोड़ तथा शहरी क्षेत्रों में 51 लाख लोगों को अल्परोजगार होने का अनुमान लगाया। इसके अतिरिक्त उस समय 30 लाख लोग स्थायी रूप से बेरोजगार थे।

सातवीं पंचवर्षीय योजना :- इस योजना के प्रारंभ में 15 वर्ष से ऊपर के व्यक्ति में लगभग 92 लाख व्यक्ति बेरोजगार थे। इस योजना के दौरान लगभग 5 करोड़ अतिरिक्त व्यक्तियों के श्रमशक्ति में प्रवेश करने का अनुमान लगाया। योजना काल तक 5 करोड़ मानक-व्यक्ति वर्ष (standard person year) के लिए रोजगार उपलब्ध कराने लक्ष्य निर्धारित किए गए।

Dr Pankaj Kushwaha
S.N.S.R.K.S College
Saharsa L.N.M.U

Date ..........
Page ..........

आठवीं पंचवर्षीय योजना :- इस योजना के अनुमान में 1 अप्रैल 1992 को पूर्णकालिक रोजगार के नये अवसर खोजने वालों की संख्या 2.3 करोड़ थी। योजना 1992-97 की अवधि में रोजगार खोजने वाले की संख्या 5.8 करोड़ होने का अनुमान लगाया गया।

राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण संगठन (National Sample Survey Organization) के 55वें चक्र (1999-2000) के श्रमशक्ति सर्वेक्षण के परिणाम स्वरूप प्रचलित दैनिक स्थिति (current daily status) वार्षिक रोजगार वृद्धि दरें 1983-1994 की अवधि में 2.7 प्रतिशत थी, 1994-2000 की अवधि में घटकर 1.07 प्रतिशत हो गई। संगठन के अनुसार देश में बेरोजगारी की संख्या 1993-94 2 करोड़ थी जो 1994-2000 में बढ़कर 2.7 करोड़ हो गई। श्रमशक्ति में बेरोजगारों का अनुपात 1983 में 8.3 प्रतिशत तथा 1999-2000 में 7.3 प्रतिशत था। ग्रामीण क्षेत्रों की बेरोजगारों की संख्या 1983 में 1.63 करोड़ 1993-1994 में 1.43 ~~1999-2000~~ 1.95 करोड़ तथा ~~7.2 प्रतिशत~~ 1999-2000 में 1.95 करोड़ थी जिनका श्रमशक्ति (Work force) में अनुपात क्रमशः 7.9 प्रतिशत, 5.6 प्रतिशत तथा 7.2 प्रतिशत था। शहरी क्षेत्रों में बेरोजगारों की संख्या 1983 में 55 लाख, 1993-1994 में 55 लाख तथा 1999-2000 में 71 लाख थी। जिसका श्रमशक्ति अनुपात क्रमशः 9.6 प्रतिशत 7.2 प्रतिशत तथा 7.7 प्रतिशत था। संगठन के निष्कर्षों के अनुसार 1999-2000 में कुल 39.7 करोड़ कामगारों में 12.2 करोड़ ऐसे कामगार थे जो कार्य में भाग लेते थे लेकिन वे निर्धनता रेखा से उपर आय अर्जित करने में असमर्थ थे। इसी स्थिति को ध्यान में रखकर 2005 में राष्ट्रीय रोजगार गारंटी अधिनियम बनाया गया जिसके अन्तर्गत निर्धन परिवारों को कम से कम वर्षभर में 100 रोज रोजगार दिलाने की व्यवस्था की गई है।

## Measures of fighting Unemployment (बेरोजगारी की दशा में सुधार के उपाय)

बेरोजगारी की समस्या को किसी एक उपाय अथवा किसी अल्पकालीन योजना से दूर नहीं किया जा सकता, क्योंकि बेरोजगार के लिए बहुत से कारण एक साथ उत्तरदायी होते हैं। पुन: अलग-अलग स्थानों में अलग-अलग प्रकृति की बेरोजगारी प्रधान रूप से पायी जाती है अत: बेरोजगारी के लिए उत्तरदायी मौलिक कारणों को दूर करने के लिए दीर्घकालीन योजना की आवश्यकता होती है, फिर भी बेरोजगारी दूर करने के लिए निम्न सुझाव दिए जा सकते हैं :- (1) जनसंख्या वृद्धि पर नियंत्रण, (2) आर्थिक विकास की गति तेज करना (3) सहकारी खेती को प्रोत्साहन (4) बचत एवं निवेश को प्रोत्साहन (5) रोजगारोन्मुखी शिक्षा प्रणाली (6) लघु उद्योगों को प्रोत्साहन (7) राष्ट्रीय निर्माण के विभिन्न कार्य (8) सामाजिक सेवाओं का विस्तार